P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-3* November- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

जनपद गढ़वालः सामाजिक-आर्थिक विकास का दशकीय तुलनात्मक स्वरूप

District Garhwal: Decadal Comparative Nature of Socio-Economic Development

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

प्रमोद कुमार
प्रवक्ता,
भूगोल विभाग,
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, पौडी, गढवाल, उत्तराखंड, भारत

के0सी0पुरोहित
पूर्व विभागाध्यक्ष,
भूगोल विभाग,
हे0न0ब0 केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढवाल, उत्तराखंड, भारत

सारांश

सामाजिक-आर्थिक सेवाओं का विस्तार किसी भी क्षेत्र के विकास के मानक तय करता है। सामाजिक-आर्थिक सेवाओं -शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात, संचार, औद्योगिक विकास, पशुधन, कृषि एवं कृषिगत क्रियाकलाप इत्यादि ये चर क्षेत्रीय विविधताओं के साथ आपस में भी जुडे हुये है तथा एक दूसरे को प्रभावित करते है।सामाजिक आर्थिक विकास की महत्वपूर्ण धुरी मानव है। जनपद गढवाल में विभिन्न विकासखंडों से मानवीय पलायन की तीव्रता के कारण क्षेत्र का सामाजिक-आर्थिक विकास भी प्रभावित हुआ है जिसमें चिंताजनक रूप से बदलाव एवं गिरावट आई है, जिसके कारण विकास की स्थानिक भिन्नता में समय-2 पर बदलाव देखने को मिलता हैं। मानव पलायन के कारण कृषिगत क्रियाकलापों एवं पशुधन में कमी का सर्वाधिक प्रभाव मानवीय स्वास्थ्य पर पडा है, जहां पूर्व में क्षेत्रीय जनता को शुद्ध जैविक खाद्यान्न, सब्जियां एवं दूध उत्पादों की आपूर्ति स्थानीय स्तर पर आसानी से हो जाती थी वही अब बदली हुई परिस्थितियों में क्षेत्रों में खाद्यान्न, मिलावटी दूध, सब्जियां जिसमें कीटनाशक, रासायनिक खादों, रसायनों का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है इन दुष्प्रभावों के कारण स्थानीय नागरिकों को कई स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड रहा है।

The expansion of socio-economic services sets the benchmark for the development of any region. Socio-economic services - education, health, transport, communication, industrial development, livestock, agriculture and agricultural activities etc. These variables are also intertwined with regional variations and influence each other. Man is an important axis of socio-economic development. Due to the intensity of human migration in different development blocks of Garhwal district, it has also affected the socio-economic development of the area, which has changed and has declined alarmingly, due to which the spatial variation of development varies from time to time. Lives. The reduction in agricultural activities and livestock due to human migration has had the greatest impact on human health, where earlier the supply of pure organic food grains, vegetables and milk products to the regional people was easily available at the local level, but now in the changed conditions of the regions. Due to excessive use of food grains, adulterated milk, vegetables in which pesticides, chemical fertilizers, chemicals are being used, the local citizens are facing many health problems due to these side effects.

मुख्य शब्दः सामाजिक-आर्थिक सेवाएं, पलायन, चर, ऋणात्मक, वृद्धि।
Socio-economic Services, Migration, Variable, Negative, Growth.

प्रस्तावना

सामाजिक-आर्थिक सेवाओं का विस्तार किसी भी क्षेत्र के विकास का एक अहम पहलू है। विश्व में विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों के विभाजन में सामाजिक एवं आर्थिक सेवायें अहम मानक हैं। वर्तमान समय में विचारों एवं मान्यताओं की संस्कृति की अपेक्षा भौतिक संस्कृति तथा तकनीकी की यांत्रिक प्रक्रिया का अधिक महत्व है। वैज्ञानिक एवं उन्नत तकनीकी के उद्भव, विकास एवं प्रसार के परिणामस्वरूप विश्व के लगभग सभी देशों में सामाजिक एवं आर्थिक मान्यताओं पर गहरा प्रभाव पड़ा है।[1]

विश्व के सभी देशों ने अपने लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास हेतु नियोजन की तकनीक को अपनाया है।2 उत्तरांचल की ग्रामीण जनता सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़ी मानी जाती है। भारतीय नियोजन कर्ताओं एवं प्रशासकों के लिए सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों की विकास योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन एक चुनौती रहा है, इसलिए इन क्षेत्रों में लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि, आर्थिकी में वृद्धि एवं नियोजन की सामाजिक न्याय की संकल्पना का लाभ न्यून रहा है।[3]
जनपद के कई ग्रामीण क्षेत्र वर्तमान में भी सामाजिक-आर्थिक सेवाओं - शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात, संचार, बैंकिंग, पशु-चिकित्सालय, प्रशासन, सामाजिक सुरक्षा इत्यादि से वंचित है, अथवा इन क्षेत्रों में ये सुविधायें पर्याप्त नहीं हैं, साथ ही इन सुविधाओं में विकासखण्ड स्तरीय विविधतायें मिलती हैं, जो कि क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक सेवाओं के असमान वितरण का द्योतक हैं।

विषम भौगोलिक परिस्थितियां, कृषि योग्य भूमि की अपर्याप्तता एवं वैज्ञानिक कृषि पद्धति के अभाव एवं न्यून उत्पादकता के कारण कृषि यहां के निवासियों को आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम नहीं हो पायी है। इसके साथ ही समूचा पर्वतीय क्षेत्र औद्योगिक दृष्टि से काफी पिछड़ा हुआ है। जनसंख्या की वृद्धि, बेरोजगारी की समस्या, कच्चे माल के बहिर्गमन की समस्यायें, कुटीर उद्योगों की उपेक्षा, उन्नत प्रजाति के पशुओं का अभाव, चरागाहों के विनाश आदि समस्याओं एवं जटिलताओं नें यहां सामाजिक आर्थिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।4 सेवा क्षेत्र पारिवारिक आय का प्रमुख स्रोत होने के कारण पहाड़ी अर्थव्यवस्था को मनीआर्डरी अर्थव्यवस्था के नाम से पुकारा जाता है।
गढ़वाल क्षेत्र में इन बुनियादी सामाजिक-आर्थिक सुविधाओं का अभाव ही क्षेत्रीय विकास में मुख्य बाधा रहा है।[5]

अध्ययन की आवश्यकता

जनपद गढवाल में बुनियादी सामाजिक-आर्थिक सुविधाओं का अभाव ही क्षेत्रीय विकास में बाधक रहा है इसलिए जनपद के विकासखंड स्तर में पाई जाने वाली क्षेत्रीय विभिन्नताओं एवं प्रादेशिक भिन्नताओं का अध्ययन करने के लिए स्थानीय संरचना एवं भिन्नताओं के आधार पर एक प्रयास किया गया है जिससे क्षेत्र की स्वास्थ्य दशाओं पर इसके प्रभाव को समझा जा सके।

उद्देश्य

जनपद में वर्तमान समय में सामाजिक-आर्थिक विकास की स्थिति एवं क्षेत्रीय भिन्नताओं का विश्लेषण करना।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत अध्ययन में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन करने से ज्ञात होता है कि समस्या पर तो पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है किन्तु क्षेत्र पर केन्द्रित अध्ययन व साहित्य की नितांत कमी है विदेशी विद्वानों का कार्य इस दुष्टि से सराहनीय है Research of world health(Peterson;2007) ,oa Socioeconomic status and childhood Obesity:A Review of literature from the past decade to inform intervention research (Vazquer,C.E & Cuppin,C, 2020) इस अध्ययन से जुडे महत्वपूर्ण कार्य है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा Monitoring sustainable development goal 3: How ready are the health information system in low income and middle income countries(2017) & A Framework and indicator for measuring the impact of health Research on the health sector in Vietnam (2019) विकासशील राष्ट्रों के बारे में पर्याप्त जानकारी प्रस्तुत करते है। भारतीय विद्वानो द्वारा भी इस दिशा में सराहनीय कार्य किये गये है Cultural frontier of health in india (Hasan,k.a 1967), The discrimination of health and Mortality (Dasgupta, M 1989), Public Health research in india in the new Millennium: A Bibliometric analysis (Kolita,A & others 2015), Health infrastructure and economic development in india(Ghose,D Soumyananda,D 2017) एवं Health care in india- vision 2020(srinivasan,2020) इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य है।
सरकारी स्तर पर भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग (2020) द्वारा प्रस्तुत Health statistics in india तथा समय समय पर इन्ही विभागों तथा राज्य सरकारों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्टों Human development report of the state of Uttarakhand (2018), Development of composite indicators to measure backwardness of districts in Uttarakhand(2017), Rural development and migration commission Uttarakhand pauri Garhwal report (2018), उत्तराखंड आर्थिक सर्वेक्षण (2019 वाल्यूम 2), इत्यादि मुख्य है।
जहां तक पर्वतीय एवं गढवाल क्षेत्र मे इस विषय पर उपलब्ध साहित्य का प्रश्न है तो मोहन सिंह (1994 अब आस्टेªलिया में), Explanations of mortality and fertility decline in himachal Pradesh पर अध्ययन सम्पन्न किया है जो उत्तराखंड के समान पर्वतीय राज्य है Karen Trollope, kumar(1994) Uks Hkh Health of Garhwal women:Intersectoral linkage with social and environmental determination ने भी द्वारा गढवाल की स्वास्थ्य स्थिति पर प्रकाश डाला है। पुरोहित, के0सी0 (1994), ने भी पौडी नगर मे महिलाओं का स्वास्थ्य व्यवहार पर अध्ययन सम्पन्न किया है। Human right and socio-economic challenges in the state of Uttarakhand :sagas and survey (suman, vij 2021) ने भी सामाजिक-आर्थिक कारकों का विश्लेषण व प्रभाव अंकित किया है।

परिकल्पना

क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास का अध्ययन एवं विश्लेषण कर स्वास्थ्य दशाओं की स्थिति को वेहतर तरीके से समझा जा सकता है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-3* November- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शोधविधि

इस कार्य के लिए जनपद के विकासखंड स्तर पर जनसंख्या संबंधी द्वितीयक आंकडे जिला सांख्यिकी पत्रिका -2001 एवं 2011 से लिए गये है।

विकास के स्तर में स्थानीय भिन्नतायें/आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

विकास के स्तरों में स्थानीय भिन्नतायें क्षेत्रों का विकसित एवं अविकसित विभाजन स्पष्ट करती हैं। जिले के विकासखण्ड स्तर में पायी जाने वाली क्षेत्रीय भिन्नताओं एवं प्रादेशिक भिन्नताओं का अध्ययन करने के लिए स्थानीय संरचना एवं भिन्नताओं के आधार पर एक प्रयास किया गया है।

यह विश्लेषण द्वितीयक संमकों एवं वर्तमान स्थानीय ढांचे पर आधारित क्रम में हैं, इसमें 24 चर लिए गये हैं, जिनका विवरण निम्नवत हैं -

1. जनसंख्या घनत्व।
2.साक्षरता (कुल जनसंख्या में प्रतिशत)।
3.लिंग अनुपात।
4.कुल कर्मकर (कुल जनसंख्या में प्रतिशत)।
5.कृषि कर्मकर (कुल कर्मकरों में प्रतिशत)।
6.गैर-कृषिगत कर्मकर (कुल कर्मकरों में प्रतिशत)।
7.शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल (कुल क्षेत्रफल में प्रतिशत)।
8.सिंचित क्षेत्र (कुल कृषि क्षेत्र का प्रतिशत)।
9.दुगना फसल क्षेत्र (कुल कृषि क्षेत्र का प्रतिशत)।
10.प्रति व्यक्ति कृषि भूमि (हे0 में)।
11.वन क्षेत्र के अन्तर्गत भूमि (कुल क्षेत्रफल में प्रतिशत)।
12.औद्योगिक प्रगति।
13.पशुधन का घनत्व।
14.पोस्ट ऑफिसों की संख्या।
15.शैक्षिक संस्थाओं की संख्या।
16.चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की संख्या।
17.पशु-चिकित्सालय एवं सेवायें।
18.बैकों की संख्या।
19.सहकारी समितियों की संख्या।
20.बाजारों की संख्या।
21.विद्युतीकृत गाँवों की संख्या।
22.पेयजल की सुविधायुक्त गाँवों की संख्या।
23.सड़क यातायात सुविधायुक्त गाँवों की संख्या।
24.नगरीय जनसंख्या।

विकास के स्तरों के मापन के लिए सभी विकासखण्डों को यथाक्रम अंक दिये गये हैं। तत्पश्चात् समस्त यथाक्रम अंकों का योग किया गया है। उपरोक्त विवरण की व्याख्या का आधार वर्ष 2011 के सांख्यिकीय पत्रिका के आंकडें है।

उपरोक्त सभी सूचकों के आधार पर विकास की स्थानिक भिन्नता को निम्न तालिका से स्पष्ट किया गया है -

जनसंख्या घनत्व

जनपद का जनसंख्या घनत्व 110 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। विकासखण्ड स्तर पर उच्च जनसंख्या घनत्व 386 दुगड्डा एवं निम्न विकासखण्ड द्वारीखाल का 49 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। जनसंख्या घनत्व को उपजाऊ कृषि भूमि द्वारा मुख्यतः प्रभावित किया गया है।

साक्षरता

साक्षरता को सामाजिक-आर्थिक प्रगति का एक विश्वसनीय सूचक माना जाता है। जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में कुल साक्षरता प्रतिशत 80.54 प्रतिशत है। यह सर्वाधिक 87.79 प्रतिशत विकासखण्ड दुगड्डा एवं न्यून 72.15 प्रतिशत विकासखण्ड थलीसैण में रही। साक्षरता की इस भिन्नता को भौगोलिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों के द्वारा प्रमुखतः प्रभावित किया गया है।

लिंग अनुपात

लिंग अनुपात किसी क्षेत्र में वर्तमान सामाजिक व आर्थिक दशाओं का सूचक होता है। जनपद का लिंगानुपात 1103 था, जो निम्नतम विकासखण्ड खिर्सू में 1042 एवं उच्चतम 1262 विकासखण्ड पोखडा में रहा। लिंगानुपात को शिक्षा, व्यवसाय, धरातलीय बनावट, उद्योग एवं रोजगार के अवसरों के द्वारा सर्वाधिक प्रभावित किया गया।

कुल कर्मकर

जनसंख्या की कार्यात्मक संरचना से मानवीय संसाधनों की क्रियाशीलता, क्षेत्र की मानव को धारण करने की क्षमता एवं आर्थिकी के विभिन्न स्रोतों के बारे में जानकारी मिलती है। जनपद में कुल जनसंख्या में कर्मकरों का प्रतिशत 23.28 प्रतिशत है। यह सर्वाधिक विकासखण्ड पावौ में 31.54 प्रतिशत एवं न्यूनतम विकासखण्ड द्वारीखाल में 16.06 प्रतिशत रहा।

कृषि कर्मकर कृषि पर्वतीय क्षेत्र के लोगों का प्रधान व्यवसाय है। जनपद में कुल कार्यशील जनसंख्या का 60.41 प्रतिशत भाग कृषि एवं इससे संबन्धित क्रिया-कलापों में संलग्न हैं। विकासखण्ड थलीसैण में यह सर्वाधिक 81.89 प्रतिशत तथा विकासखण्ड खिर्सू में यह 26.34 प्रतिशत न्यूनतम रहा है।

गैर-कृषिगत कर्मकर जनपद में द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र की सीमितता के कारण इन क्षेत्रों में न्यून जनसंख्या संलग्न है। जनपद में कार्यशील जनसंख्या का 39.59 प्रतिशत गैर-कृषिगत क्रिया-कलापों में संलग्न है। यह सर्वाधिक विकासखण्ड खिर्सू में 73.66 प्रतिशत एवं न्यूनतम 18.11 प्रतिशत विकासखण्ड थलीसैण में रहा है।

शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्र में शुद्ध बोये गये क्षेत्र का 9.28 प्रतिशत है। यह सर्वाधिक विकासखण्ड पोखड़ा में 11.72 प्रतिशत एवं न्यूनतम विकासखण्ड थलीसैण में 7.23 प्रतिशत है। शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल को वनक्षेत्रों एवं जनसंख्या प्रवास के द्वारा सर्वाधिक प्रभावित किया गया है।

सिंचित क्षेत्र जनपद में सिंचाई सुविधा- कच्ची एवं पक्की नहरों, तालाबों, नलकूपों एवं अन्य स्रोतों से होती है। शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल का 15.92 प्रतिशत भाग ही सिंचित क्षेत्र है। इसमें 39.95 प्रतिशत सिंचाई नहरों द्वारा, 13.97 प्रतिशत नलकूपों द्वारा एवं 46.08 प्रतिशत सिंचाई अन्य स्रोतों के द्वारा होती है। विकासखण्ड दुगड्डा में यह प्रतिशत सर्वाधिक 50.69 प्रतिशत है एवं न्यूनतम प्रतिशत 8.16 प्रतिशत विकासखण्ड नैनीडाण्डा में है।

दुगना फसल क्षेत्र इस प्रकार की कृषि में एक वर्ष के अन्तराल में एक खेत से दो फसलों का उत्पादन किया जाता है। शुद्ध बोये गये क्षेत्र में 32.66 प्रतिशत क्षेत्र दुगना फसल क्षेत्र है। दुगना फसल क्षेत्र के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्र विकासखण्ड वीरोंखाल में 86.02 प्रतिशत एवं न्यूनतम विकासखण्ड दुगड्डा में 8.6 प्रतिशत है।

प्रति व्यक्ति कृषि भूमि विषम भौगोलिक परिस्थितियों एवं वन क्षेत्र की अधिकता के कारण प्रति व्यक्ति कृषि भूमि की न्यूनता है। जनपद में कुल क्रियात्मक जोतों में 62.77 प्रतिशत संख्या 01 हेक्टेयर से कम है। सर्वाधिक प्रतिव्यक्ति कृषि भूमि की उपलब्धता 0.30 हेक्टेयर विकासखण्ड नैनीडांडा में रही एवं विकासखण्ड दुगडडा में यह प्रतिशत न्यूनतम 0.095 हेक्टेयर रहा।
प्रतिव्यक्ति कृषि भूमि की उपलब्धता का औसत जनपद में 0.18 हेक्टेयर था

वनों के अन्तर्गत क्षेत्र जनपद का 57.56 प्रतिशत भाग वन क्षेत्रों के अन्तर्गत है, जिसमें पंचायती, सिविल एवं रिजर्व फॉरेस्ट सम्मिलित हैं। वनों के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्र विकासखण्ड खिर्सू में 67.38 प्रतिशत है, जबकि न्यूनतम प्रतिशत विकासखण्ड पाबौ में 43.91 प्रतिशत है।

औद्योगिक प्रगति जनपद गढ़वाल औद्योगीकरण की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। जनपद में कारखाना अधिनियम 1948 के अन्तर्गत पंजीकृत कारखाने मात्र 04 थे, जिनमें मात्र 352 कार्मिक ही कार्यरत थे। जनपद का औद्योगीकरण की दृष्टि से पिछड़ने का मुख्य कारण- पैसे की कमी, कच्चेमाल की कमी, बाजार की कमी, लोगों का परम्परागत स्वरूप, यातायात इत्यादि मुख्य कारण हैं। लेकिन सीमित मात्रा में लघु औद्योगिक इकाईयां 241 एवं खादी ग्रामोद्योग की 44 इकाईयां विभिन्न विकासखण्डों में स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त कुटीर उद्योग के रूप में कृषि, वनक्षेत्रों एवं पशुधन से जुड़ी इकाईयाँ भी सीमित मात्रा में ग्रामीण क्षेत्रों में केन्द्रित हैं।
सीमित मात्रा में वर्तन निर्माण, वस्त्र निर्माण, चक्की उद्योग, काष्ठ उद्योग, जड़ी बूटी उद्योग, तेल व्यवसाय इत्यादि की इकाईयां हैं। इन कुटीर उद्योगों की इकाईयों में कमी का मुख्य कारण अनुसूचित जाति के लोगों को सरकार द्वारा प्रदत्त आरक्षण है, जिसके कारण उन्होंने अपना व्यवसाय प्रवर्तित किया। पारिवारिक उद्योगों मैं जनपद स्तर पर कर्मकरों का कुल मुख्य कर्मकरों से प्रतिशत 1.97 है जिसकी सर्वाधिक प्रतिशतता 5.09 जयहरिखाल एवं न्यूनतम 0.79 प्रतिशत विकासखंड पौडी में है।

पशुधन का घनत्व कृषि की तुलना में पशुपालन विकास के लिए यहां पर भौगोलिक परिस्थितियां उपयुक्त है। जनपद में पशुपालन को कृषि के पूरक व्यवसाय के रूप में अपनाया जाता है, लेकिन पशुओं की उपयुक्त प्रजातियों के अभाव में इनकी गुणवत्ता निम्न है। जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन-घनत्व 120 पशु प्रतिवर्ग किमी0 है। यह सर्वाधिक 253 विकासखण्ड एकेश्वर में एवं न्यूनतम 44 विकासखण्ड खिर्सू में है। मात्र विकासखण्ड एकेश्वर, एवं दुगडडा में यह घनत्व 200 पशु प्रतिवर्ग किमी0 से अधिक है।

पोस्ट ऑफिसों की संख्या

जनपद के विभिन्न भागों में पोस्ट-ऑफिसों की संख्यां 424 है।जो कि जनपद के ग्रामों में स्थित है। जनपद के 13.62 प्रतिशत गांवों में पोस्ट ऑफिस सुविधा उपलब्ध है। यह संख्या सर्वाधिक विकासखण्ड यमकेश्वर में 19.46 प्रतिशत है एवं न्यूनतम संख्या विकासखण्ड- जयहरिखाल में 8.33 है।

शैक्षिक संस्थानों की संख्या

जनपद में 1745 जूनियर बेसिक स्कूल, 432सीनियर बेसिक स्कूल, 453 हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट कालेज, 8 महाविद्यालय, 01 स्नातकोत्तर विद्यालय, 05 पालीटेक्निक, 14 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, 01 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान स्थित हैं। शैक्षिक संस्थानों की सर्वाधिक संख्या 284 विकासखण्ड दुगड्डा एवं न्यूनतम संख्या 111 विकासखण्ड खिर्सू में है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की संख्या

जनपद में 06 बड़े चिकित्सालय, 02 संयुक्त चिकित्सालय, 01 बेस चिकित्सालय, 15 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 38 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 72 एलोपैथिक चिकित्सालय, 01 महिला चिकित्सालय, 60 आयुर्वेदिक चिकित्सालय, 14 होम्योपैथिक चिकित्सालय, 36 मातृशिशु कल्याणकेन्द्र एवं 257 मातृशिशु कल्याण उपकेन्द्र तथा 10 स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा संचालित चिकित्सालय अपनी सेवाएं दे रहे हैं। स्वास्थ्य इकाईयों की गांवों में सर्वाधिक संख्या 15.65 प्रतिशत विकासखंड पावौ एवं न्यूनतम विकासखण्ड नैनीडांडा में 8.28 है।

पशु चिकित्सालय एवं अन्य सेवाएं

जनपद में 41 पशु-चिकित्सालय, 110 पशुधन विकास केन्द्र, 68 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र अपनी सेवायें दे रहे हैं। इनकी सर्वाधिक संख्या 25 विकासखण्ड दुगड्डा में एवं न्यून संख्या 10 विकासखण्ड - पोखडा एवं खिर्सू में है।

बैंकों की संख्या

जनपद के सभी विकासखण्डों में बैंकों की शाखायें स्थित है। जनपद में 58 राष्ट्रीयकृत बैंक शाखाएं, 33 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक शाखाएं एवं अन्य 26 गैर राष्टीयकृत बैंक कुल 117 अपनी सेवाएं दे रही हैं। जिनमें सर्वाधिक विकासखंड दुगड्डा में 15 एवं 06 विकासखंड जयहरिखाल, कल्जीखाल,पौडी एवं पावौ में है।

सहकारी समितियों की संख्या

जनपद में 132 कृषि ऋण सहकारी समितियां, 03 क्रय-विक्रय सहकारी समिति, 03 संयुक्त कृषि समितियां, । इनकी सर्वाधिक संख्या विकासखंड द्वारीखाल एवं दुगड्डा में 11 एवं न्यूनतम 05 इकाईयां विकासखंड खिर्सू में केन्द्रित है।

बाजारों की संख्या

जनपद गढ़वाल में विभिन्न केन्द्रीय स्थलों पर बाजारों की सुविधा उपलब्ध है। जनपद गढ़वाल में लगभग 172 बाजार एवं हाट हैं। इनमें महत्वपूर्ण बाजार- पौड़ी, श्रीनगर, देवप्रयाग, कोटद्वार, लैंसडाउन, दुगड्डा, जयहरिखाल, पाबौ, लक्ष्मणझूला, सतपुली, पाटीसैंण, जड़ाउखाद इत्यादि मुख्य है। बाजार एवं हाट की सर्वाधिक संख्या विकासखंड थलीसैण में 20 एवं न्यूनतम विकासखंड -पौडी में 04 है।

विद्युतीकृत गाँवो की संख्या

जनपद के विकासखंड नैनीडांडा 99.31 प्रतिशत को छोडकर जनपद के अन्य 14 विकासखंडों में शत प्रतिशत ग्राम विद्युतीकृत है।

पेयजल की सुविधा युक्त गाँवों की संख्या

जनपद के 4727 तोख में मात्र 1640(34.69) तोख ही पेयजल से पूर्ण आच्छादित है। जनपद में यह पेयजल-आपूर्ति नदियों, नलो, प्राकृतिक स्रोतों के द्वारा पूरी होती है। लेकिन गर्मियों में अधिसंख्य गाँव पेयजल संकट ग्रस्त रहते हैं। पेयजल सुविधायुक्त तोखों की सर्वाधिक संख्या- विकासखंड- दुगड्डा, में 64 प्रतिशत है। पेयजल सुविधायुक्त तोखों की न्यूनता विकासखंड- कोट में है। यहां पर 6.6 प्रतिशत तोखों में ही यह सुविधा है।

सड़क यातायात सुविधायुक्त गाँवो की संख्या

विषम भौगोलिक परिस्थितियों के चलते सड़कें जनपद में यातायात का प्रमुख साधन है। जनपद में पक्की सड़कों की कुल लम्बाई 2352 कि0मी0 है तथा सब ऋतु योग्य सडकों से जुडे ग्राम 1944(62.43) प्रतिशत है। जनपद के विकासखंड - खिर्सू में सर्वाधिक 95.93 प्रतिशत गाँव सड़कों से जुड़े है। विकासखंड नैनीडांडा में यह प्रतिशत 45.52 प्रतिशत सर्वाधिक न्यून है।

नगरीय जनसंख्या

जनपद में नगरीय केन्द्रों की कुल संख्या 07 है। इनमें - पौड़ी, श्रीनगर, काशीरामपुर,कोटद्वार, दुगड्डा, लैंसडाउन, कालागढ़, बाहा बाजार एवं जौंक है। नगरीय जनसंख्या, कुल जनसंख्या का 16.40प्रतिशत हैं विकास खण्ड दुगड्डा में नगरीय जनसंख्या का सर्वाधिक भाग केन्द्रित है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-3* November- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गढ़वाल जनपद में विकासखंडवार सूचकों की क्रम संख्या विभाजन

क्र0 सं0	विकास खण्ड	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	कुल योग	विकास सूचकांक
1	कोट	06	11	12	05	06	10	05	12	07	04	09	13	07	08	11	10	04	05	03	09	01	15	08	06	187	13.79
2	कल्जीखाल	07	08	05	12	10	06	09	08	04	08	08	14	08	04	08	14	04	06	03	05	01	14	09	09	184	14.01
3	पौढ़ी	02	04	11	09	11	05	07	11	08	02	12	15	06	12	13	02	06	06	02	11	01	11	02	02	171	15.08
4	पाबौ	13	09	03	01	04	12	04	09	03	12	15	11	13	02	07	01	08	06	04	05	01	05	03	07	158	16.32
5	थलीसैंण	9	15	08	02	01	15	15	03	05	14	14	08	10	03	02	03	07	02	05	01	01	06	14	11	174	14.82
6	बीरोंखाल	03	12	02	03	02	14	14	06	01	13	04	12	05	09	03	11	06	05	02	06	01	07	13	11	165	15.62
7	द्वारिखाल	15	03	09	15	13	03	12	02	02	09	13	05	14	05	04	09	02	03	01	02	01	03	11	10	166	15.53
8	दुगड्डा	01	01	14	11	14	02	06	01	15	15	11	04	02	13	01	13	01	01	01	09	01	01	07	01	146	17.66
9	जयहरिखाल	10	07	10	14	12	04	11	07	11	06	05	01	11	15	10	12	08	06	03	10	01	09	12	04	199	12.95
10	एकेश्वर	04	05	07	07	09	07	02	14	12	08	03	07	01	07	09	08	03	03	03	06	01	12	05	08	146	17.66
11	रिखणीखाल	12	14	06	04	03	13	10	10	10	10	07	10	09	10	12	06	07	05	05	04	01	08	10	11	197	13.09
12	यमकेश्वर	14	06	13	06	05	11	08	04	06	07	02	06	12	01	05	07	06	05	02	08	01	02	06	05	148	17.42
13	नैनीढांढा	08	13	04	10	07	09	03	15	09	01	06	02	03	14	06	15	05	04	02	03	02	10	15	11	177	14.56
14	पोखड़ा	05	10	01	13	08	08	01	13	13	05	10	09	04	11	14	04	09	05	05	07	01	04	04	11	175	14.73
15	खिर्सू	11	02	15	08	15	01	13	05	14	11	01	03	15	06	15	05	09	03	06	09	01	13	01	03	185	13.94
योग विकास खण्ड																										2578 172	14.22

स्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका 2011, जनपद पौढ़ी गढ़वाल

सारणी के आधार पर ये क्रमवद्ध श्रेणी प्राप्त होती है इसके लिए निम्न सूत्र लागू किया गया।
DI=T.S
यहां पर DI विकास सूचकांक
T.S= सभी इकाईयों का कुल योग
T.N= व्यकितगत इकाइयों का कुल योग
उपरोक्त गणना के आधार पर सूचकों का क्रमसंख्या विभाजन निम्नवत् है-

गढ़वाल जनपद में सूचकों की क्रम संख्या विभाजन

क्र0सं0	श्रेणी अंक	विकास खण्डों की सं0	विकास सूचकांक
1	I 150 से कम	04	16 से अधिक
2	II 150—170	07	14—16
3	III 170 से अधिक	04	14 से कम
	165.3		15

स्रोतःसांख्यिकीयपत्रिका,2011,जनपदपौढ़ी।

सभी विकास खण्डों के कुल अंक 2578 थे, इनको विकास खण्डों की संख्या से विभाजित किया गया और जिले का माध्य 171.87 था। क्षेत्र की स्थिति को और स्पष्ट करने के लिए विकास सूचकांक (DI) का प्रयोगकर विकास प्रदेश का विभाजन निम्नवत् है-

गढ़वाल जनपद में विकास प्रदेशों का विभाजन

क्र0 सं0	विकास सूचकांक (D.I)	श्रेणी	विकासखंडो की संख्या	विकास खड्डों का नाम
1	14 से कम	कम विकसित	04	जयहरिखाल, रिखणीखाल, कोट, खिर्सू।
2	14—16	मध्यम विकसित	07	कल्जीखाल, नैनीडांडा, पौडी ,वीरोंखाल ,थलीसैंण ,पोखड़ा, द्वारीखाल।
3	16 से अधिक	अधिक विकसित	04	पावौ, यमकेश्वर, दुगड्डा, एकेश्वर।

स्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका, 2011, जनपद पौढ़ी गढ़वाल

कम विकसित क्षेत्र

इस श्रेणी में विकासखंड- कोट, जयहरिखाल, रिखणीखाल, एवं खिर्सू को सम्मिलित किया गया है। इस श्रेणी का विकास सूचकांक 14 से कम है। इन विकासखंडो का कम विकसित होने की पीछे मुख्य समान कारण -कम जनसंख्या घनत्व,लिंग अनुपात,शुद्व बोया गया क्षेत्र,दुगना फसल क्षेत्र, पशुधन घनत्व में कमी,शैक्षिक संस्थानों में कमी,कम बाजारों की संख्या,पेयजल सुविधायुक्त कम गांव,कम सडक सुविधायुक्त गांव मुख्य है।यदि हम विकासखंडवार चरों का प्रदर्शन देखे तो विकासखंड कोट में अन्य चरों की तुलना में साक्षरता,लिंग अनुपात,सिंचित क्षेत्र,औद्योगिक प्रगति,वनक्षेत्र,शैक्षिक संस्थानों की संख्या, विकासखंड जयहरिखाल में कुल कर्मकर, कृषि कर्मकर ,शुद्व बोया गया क्षेत्र,दुगना फसल क्षेत्र, पशु घनत्व, शैक्षिक संस्थानों की कम संख्या,चिकित्सा स्वास्थ्य सेवायें,सडक, विकासखंड रिखणीखाल में जनसंख्या घनत्व, साक्षरता, गैर कृषिगत कर्मकर,शैक्षिक संस्थान, नगरीय जनसंख्या विकासखंड खिर्सू में जनघनत्व, लिंग अनुपात, कृषि कर्मकर, शुद्व बोया गया क्षेत्र,दुगना फसल क्षेत्र, प्रति व्यक्ति कृषि भूमि, पशुधन घनत्व, शैक्षिक संस्थान,सडक यातायात में प्रदर्शन बेहतर नहीं है। अन्य में यह सामान्य से उच्च है।

मध्यम् विकसित क्षेत्र

इस श्रेणी में विकासखंड - कल्जीखाल, पौडी, पोखड़ा, द्वारीखाल,थलीसैण,वीरोंखाल एवं नैनीडांडा को सम्मिलित किया गया है। इस श्रेणी का विकास सूचकांक 14-16 के मध्य है। यदि हम इस श्रेणी में विकासखंडवार चरों का प्रदर्शन देखे तों विकासखंड- कल्जीखाल में कुल कर्मकरों, औद्योगिक प्रगति, पेयजल सुविधायुक्त गांव,विकासखंड पौडी में लिंग अनुपात, कृषि कर्मकर,सिंचितक्षेत्र, वनक्षेत्र, औद्योगिक प्रगति,पेयजल सुविधायुक्त गांव, विकासखंड थलीसैण मे- साक्षरता,गैर कृषिगत कर्मकर,शुद्व बोया गया क्षेत्र, प्रतिव्यक्ति कृषि भूमि, सडक सुविधायुक्त गांव, नगरीय जनसंख्या विकासखंड वीरोखाल में साक्षरता, गैर कृषिगत कर्मकर,शुद्व बोया गया क्षेत्र,प्रति व्यक्ति कृषि भूमि,औद्योगिक प्रगति, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधा, सडक, नगरीय सुविधा विकासखंड द्वारीखाल में जनसंख्या घनत्व,कुल कर्मकर, कृषि कर्मकर,शुद्व बोया गया क्षेत्र,वनभूमि, पशुधन घनत्व, सडक यातायात सुविधा, विकासखंड नैनीडांडा में साक्षरता, सिंचित क्षेत्र,स्वास्थ्य सुविधा, सडक सुविधा, नगरीय जनसंख्या तथा विकासखंड पोखडा में कुल कर्मकर,सिंचित क्षेत्र,दुगना फसल क्षेत्र,शैक्षिकसंस्थान, नगरीय जनसंख्या में प्रदर्शन वेहतर नहीं रहा है जबकि अन्य चरों का प्रदर्शन सामान्य से उच्च श्रेणी में है।

अधिक विकसित क्षेत्र

इस श्रेणी में विकासखंड- पावौ,यमकेश्वर, दुगड्डा, एवं एकेश्वर को सम्मिलित किया गया है। इस श्रेणी का विकास सूचकांक 16 से अधिक है। विकसित क्षेत्र भी कई विकास के स्तरों में पिछड़े हैं, लेकिन अधिकांश स्तरों में इनकी स्थिति उपयुक्त होने से ये तुलनात्मक क्रम में आगे हैं। यदि हम विकासखंडवार वेहतर प्रदर्शन करने वाले चरों का विश्लेषण करे तो विकासखंड पावौ में लिंगानुपात, कुलकर्मकर, कृषि कर्मकर, शुद्व बोया गया क्षेत्र, दुगना फसल क्षेत्र, शैक्षिक संस्थान, चिकित्सा सुविधा, बैक, पेयजल, सडक, विकासखंड दुगड्डा में जनसंख्या घनत्व , साक्षरता, गैर कृषि कर्मकर, शुद्व बोया गया क्षेत्र, सिंचित क्षेत्र, औद्योगिक प्रगति, पशुधन घनत्व, शैक्षिक संस्थान, पशु सेवाएं, बैंक, सहकारी समिति, विद्युतीकरण, पेयजल सुविधा,सडक, नगरीय जनसंख्या, विकासखंड एकेश्वर में जनघनत्व, साक्षरता, लिंग अनुपात, कुल कर्मकर, शुद्व बोया गयाक्षेत्र, वनक्षेत्र, परतीकृषि भूमि, औद्योगिक प्रगति, पशुधन धनत्व, बैंक, सहकारी समिति, विद्युतीकृत गांव , सडक, यातायात, तथा विकासखंड यमकेश्वर में साक्षरता, कुल कर्मकर, कृषि कर्मकर, सिंचितक्षेत्र, दुगना फसल क्षेत्र, प्रतिव्यक्ति कृषि भूमि, वनक्षेत्र, उद्योग, चिकित्सा,शिक्षा, पशु चिकित्सालय, बैंक, विद्युतीकरण,पेयजल, सडक, नगरीय जनसंख्या में प्रदर्शन बेहतर रहा है। शेष चरों में प्रदर्शन सामान्य से कम की ओर रहा है।

विकासखंडवार सूचकों का दशकीय तुलनात्मक विवरण

क्र0 सं0	विकास खण्ड	विकास सूचकांक वर्ष 2001	विकास सूचकांक वर्ष 2011	विकास सूचकांक अन्तर
1	कोट	16.6	13.79	−2.81
2	कल्जीखाल	15.3	14.01	−1.29
3	पौडी	17.7	15.08	−2.62
4	पावौ	15.0	16.32	+1.32
5	थलीसैंण	14.0	14.82	+0.82
6	बीरोंखाल	18.6	15.62	−2.98
7	द्वारीखाल	16.0	15.53	−0.47
8	दुगड्डा	16.9	17.66	+0.76
9	जयहरिखाल	13.5	12.95	−0.55
10	एकेश्वर	16.8	17.66	+0.86
11	रिखणीखाल	11.9	13.09	+1.19
12	यमकेश्वर	12.9	17.42	+4.52
13	नैनीडांडा	13.6	14.56	+0.96
14	पोखड़ा	15.4	14.73	−0.67
15	खिर्सू	13.5	13.94	+0.44
योग विकास खण्ड		15.18	14.22	−0.96

निष्कर्ष

गढवाल जनपद के सामाजिक आर्थिक विकास को मानव पलायन के द्वारा सर्वाधिक प्रभावित किया गया है।

विकासखंड-कोट, कल्जीखाल, पौडी, वीरोंखाल, द्वारीखाल, जयहरिखाल एवं पोखडा में वर्ष 2011 की गणना में विकास सूचकांक वर्ष 2001 की तुलना में ऋणात्मक रहा है।वर्ष 2001 में विकासखंड कोट, पौडी, वीरोंखाल, द्वारीखाल, दुगड्डा एवं एकेश्वर का विकास सूचकांक 16 से अधिक था लेकिन वर्ष 2011 की गणनानुसार 16 से अधिक विकास सूचकांक वाले विकासखंड -पावौ, यमकेश्वर, दुगड्डा व एकेश्वर थे अर्थात विकासखंड पौडी, वीरोंखाल, द्वारीखाल अधिक विकसित श्रेणी से वर्ष 2011 में मध्यम व विकासखंड कोट कम विकसित की श्रेणी में आ गये जबकि विकासखंड पावौ 2001 में मध्यम से 2011 में अधिक विकसित व विकासखंड यमकेश्वर 2001 में कम विकसित से वर्ष 2011 में अधिक विकसित की श्रेणी में आ गया।निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानवीय जनसंख्या व उसके क्रियाकलापों द्वारा सामाजिक-आर्थिक विकास के चरों को प्रभावित किया जाता है जो कि गढवाल जनपद के अध्ययन से स्पष्ट है जहां पर विकाससूचकांक वर्ष 2001 में 15.18 से वर्ष 2011 में घटकर 14.22 रह गया है व इसमें 0.96 की गिरावट आई है। इन चरों में बदलाव का प्रभाव शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात ,औद्योगिक विकास,पशुधन, कृषि एवं कृषिगत क्रियाकलापों पर मुख्य रूप से पडा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *खर्कवाल, एस0सी0 एंव पुरोहित, के0सी0 (1999): संास्कृतिक भूगोल नूतन पब्लिकेशन कोटद्वार पृष्ठ -177*
2. *Purohit, K.C. (1996) : Spacio Functional Approach for Planning in Hill Region, Abhikathan Publication, New Delhi, P. 11.*
3. *Purohit, K.C. Op. Cit, p 4.*
4. *गैरोला, रामानंद, उत्तराखंड दृष्टि दशा एवं दिशा (1994) शिवा आफसैट प्रैस 14ओल्ड कनाड प्लेस, देहरादून पृष्ठ 87-88*
5. *नेगी जगमोहन, गढ़वाल और गढ़वाल (1997) विंसर पब्लिकेशन - 126 विकासमार्ग पौडी पृष्ठ - 251*
6. *Purohit, K.C. Op. Cit, p 56-57.*
7. *साख्यिकीय पत्रिका वर्ष-2001 एवं 2011।*
8. *Karen Trollope. Kumar(1994) Health of Garhwali Women: Intersectoral Linkage With Social and Environmental Determinant.*